ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.19, No.4, Oct. – Dec., 2024/24

महर्षि वाल्मीकि का आर्थिक चिन्तन

रामलाल विश्वकर्मा

https://doi.org/ 10.61410/had.v19i4.208

पाश्चात्य आर्थिक विशेषज्ञों के अभिमत से भारत में कोई व्यवस्थित अर्थशास्त्रीय चिन्तन परम्परा नहीं रही है। सम्भवतः ये पाश्चात्य विद्वान् प्राचीन भारतीय साहित्य (वैदिक साहित्य) से अनभिज्ञ थे। जिसमें आर्य बहुत पहले से ही एक नियमित सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत संगठित होकर अपनी जीवन–चर्या को स्थायी रूप दे चुके थे तथा उनका आर्थिक जीवन अत्यधिक स्थिर एवं उन्नत बन गया था। उनकी जीविका का प्रमुख साधन खेती तथा पशु पालन था। आर्य कृषि को अत्यधिक महत्त्व देते थे। पाश्चात्य आर्थिक चिन्तन तो केवल अर्थ और काम तक ही सीमित थे, किन्तु भारतीय ज्ञान परम्परा मे इसे अपूर्ण एवं संकुचित मानते हुए धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के रूप में चार पुरुषार्थों की सहायता से अर्थशास्त्र को अत्यधिक व्यापक और सन्तुलित आधार प्रदान किया है।

अर्थ का महत्त्व

एक सुशासित एवं शान्ति पूण्ज्ञ राष्ट्र या सामाजिक जीवन ही आर्थिक व्यवस्था का मूलाधार होता है। राष्ट्र या सामाजिक जीवन के लिए अर्थ की बृहद् भूमिका है। अर्थ एक शक्ति है। रामायण काल में अर्थ का महत्त्व भली भाँति प्रकट था। वाल्मीकि रामायण के युद्ध काण्ड में लक्ष्मण का कथन इसका पुष्ट प्रमाण है–**'अर्थ ही धर्म का मूल है, जैसे पर्वत से नदियाँ निकलती है वैसे अर्थ से सब क्रियाएँ। अर्थहीन मनुष्य मन्दबुद्धि गिना जाता है, उसके सब काम बिगड़ जाते हैं, उसकी दशा ग्रीष्म–ऋतु के तालाब की सी हो जाती है। जिसके पास सम्पत्ति होती है, उसी के मित्र और उसी के बन्धु होते हैं, वही पण्डित, पराक्रमी, बुद्धिमान और गुणी कहलाता है। धन के त्याग में दोष ही दोष है। जिसके पास धर्म और काम के लिए अर्थ वर्तमान है, उसी के लिए सब कुछ उसके पास ही है। आनन्द, काम, दर्प, धर्म, क्रोध, शान्ति और दम ये सब धन की सहायता से सिद्ध होते हैं।''**

(यस्मादर्था विवर्धन्ते.....प्रवर्तन्तेन राधिप।)[1]

प्राचीन भारत में वित्त शास्त्र को **'वार्ता'** की संज्ञा दी गयी थी। 'वार्ता' शब्द का प्रयोग वैश्यों के तीन प्रमुख धन्धों कृषि, गोरक्षा और व्यापार के लिए किया जाता था। रामायण के समय मे वार्ता शास्त्र का महत्त्व इतना अधिक बढ़ गया था कि राजा को तीन विद्याओं **'विद्यास्तिस्रः'**[2] में निपुण होना पड़ता था। त्रयी, वार्ता और दण्ड नीति ये तीन विद्याएँ हैं। इनमें तीनो वेदों को 'त्रयी' कहते हैं। कृषि, गो रक्षा और व्यापार 'वार्ता' के अन्तर्गत हैं तथा नीतिशास्त्र का नाम 'दण्डनीति' है वस्तुतः वार्ता के विषय ही रामायण काल में जीविका के प्रमुख साधन थे और इस दायित्व का निर्वहन वैश्य वर्ण करता था–

कच्चित् तेदयिताः सर्वेकृषि गोरक्षजीविनः।
वार्तायां संश्रित स्तातलोकोऽयं सुख मेधते।।[3]

रामायण में वर्णित वर्ण–विभाजन श्रम–विभाजन एवं विशिष्टीकरण के नियमों पर आधारित था। सकल समाज को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र वर्गों में विभक्त कर उत्पादन कार्य को किया जाता था। यद्यपि सभी वर्ग जीवन–यापन के लिए कृषि कार्य पर आश्रित थे। कृषि, पशुपालन,

सहायक आचार्य, संस्कृत–विभाग, का0सु0 साकेत पी0जी0कॉलेज, अयोध्या

वाणिज्य–व्यापार, उद्योग–धन्धों आदि को सम्पन्नता, प्रसन्नता, शक्ति एवं आजीविका के लिए नितान्त आवश्यक माना गया था। रामायण में अत्यधिक उत्पादन करने के लिए उत्पादकों का संयोजन एवं प्रयोग का विशद वर्णन प्राप्त होता है।

कृषि

वाल्मीकि रामायण में कृषि ही आय का प्रमुख स्रोत था। इसमें कृषि का विशद वर्णन मिलता है। भारत का शाश्वत एवं चिर–अभ्यस्त उद्योग कृषि रामायण काल में आजीविका का सामान्य साधन था। तत्कालीन सभी जनपद एवं प्रदेश शुभसस्य से सम्पन्न रहते थे। मागधी नाम से प्रसिद्ध सोन नदी के दोनों तटों पर अत्यन्त उपजाऊ खेत थे, जिनसे यह सदैव शस्य सम्पन्न रहती थी–

सैषा हिमागधी रामवसोस्तस्य महात्मनः।
पूर्वाभिचरिता रामसुक्षेत्रा सस्य मालिनी।।[4]

वन गमन के समय श्रीराम का रथकोसल और वत्सदेशों से होकर निकला, जो धान्य सम्पत्ति एवं सस्य सम्पत्ति से सम्पन्न थे–

''ततो धान्यधनोपेतान् दानशीलजनान् शिवान्। अकुतश्चिद् भयान् रम्यांश्चैत्य यूपसमाभृतान्।।
उद्यानाम्र व्रणोपेतान् सम्पन्न सलिलाशयान्। तुष्टपुष्ट जनाकीर्णान् गोकुला कुल सेवितान्।।''[5]
''सलोक पाल प्रतिम प्रभावस्तीर्त्वा महात्मा वरदोमहानदीम्।
ततः समृद्धान् शुभसस्यमालिनः क्रमेण वत्सान् मुदितानु पागमत्।।''[6]

लवणासुर का वध करने वाले शत्रुघ्न ने मधु पुरी को बसाया जो शीघ्र ही खेत से हरे भरे हो गये–

क्षेत्राणि सस्ययुक्ता निकाले वर्ष तिवासवः।
अरोगवीर पुरुषा शत्रुघ्न भुज पालिता।।[7]

वनवास के समय पंचवटी में निवास करते समय हेमन्त–ऋतु के आगमन पर लक्ष्मण ने हेमन्त–ऋतु का वर्णन करते हुए तत्कालीन कृषि की शोभा का अत्यन्त मनोहारी चित्रण किया। इससे प्रतीत होता है कि रामायण युग में कृषि से प्रभूत मात्रा में अन्नोत्पादन किया जाता था–

बाष्पछन्नान्यरण्यानि यवगोधूमवन्तिच।
खर्जुरपुष्पाकृतिभिः शिरोभिः पूर्णतण्डुलैः।
शोभन्तेकिंचिदालम्बाः शालयः कनकप्रभा।।[8]

सम्पूर्ण अयोध्या नगरी राम में अनुरक्त थी। अयोध्या नगरी के निवासी अपने उद्यानों, भवनों और खेतों को छोड़कर राम के साथ वन जाने को तत्पर हो गये थे। इससे स्पष्ट होता है कि रामायण काल में फल, अन्न आदि का अत्यधिक मात्रा में उत्पादन होता था और बहुत दूर बेचने नहीं जाना पड़ता था–

उद्याना निपरित्यज्य क्षेत्राणि च गृहाणिच।
एकदुःखसुखा राममनुगच्छाम धार्मिकम्।।[9]

भरत जी ने उपमा का आश्रय लेकर कृषि के लिए वर्षा के महत्त्व के कारण किसान मेघ की प्रतीक्षा करते हैं। इससे ज्ञात होता है कि अन्नोत्पादन के लिए कृषक वर्षा पर भी आश्रित थे–

ज्ञातयश्चापि योधाश्चमित्राणि सुहृदश्चनः।
त्वामेव हिप्रतीक्षन्तेपर्जन्यमिव कर्षकाः।।[10]

हनुमान से श्रीराम का कुशल–समाचार जानकर सीता को हर्षातिरेक से वैसे ही रोमांच हो आया जैसे आधे ही उगे अंकुरों वाली धरती में वर्षा के पानी से सारे बीज प्रस्फुटित हो जाते हैं। इस सेभी स्पष्ट होता है कि रामायण काल में वर्षा के पानी से अन्नोत्पादन किया जाता था–

त्वां दृष्ट्वाप्रियवक्तारंसम्प्रहृष्यामिवानर।
अर्धसंजातसस्येववृष्टिंप्राप्य वसुन्धरा।।[11]

श्रीराम ने बालि से भयभीत सुग्रीव को सान्त्वना देते हुए कृषि एवं वर्षा सम्बन्धी उपमान प्रस्तुत किया है। जिससे प्रतीत होता है कि श्रीराम के लिए कृषि आय का प्रमुख साधन था। श्रीराम कहते हैं– हे सुग्रीव! जैसे वर्षाकाल में अच्छे खेत में बोया गया बीज अवश्य फल देता हैं, उसी प्रकार तुम्हारा सारा मनोरथ सफल होगा–

वर्षास्विव च सुक्षेत्रे सर्वसम्पद्यते तव।[12]

राम राज्य में मेघ समय पर अमृत के समान जल की वर्षा करते थे। इससे प्रतीत होता है कि श्रीराम के समय में कृषि के माध्यम से प्रभूत मात्रा में अन्न का उत्पादन होता था–

हर्षाश्चाभ्यधिको राजञ्जनस्य पुरवासिनः।
कालेवर्षतिपर्जन्य पातयन्न मृतंपयः।।[13]

रामायण काल में खेती प्रमुख रूप से वर्षा पर आश्रित थी, किन्तु वर्षा न होने पर वैकल्पिक साधनों द्वाराभी खेत की सिंचाई की जाती थी। कोसल एक ऐसा देश था जहाँ खेती के लिए वर्षा के जल पर निर्भर नहीं रहना पड़ता था। चित्रकूट को आये हुए भरत से श्रीराम ने स्पष्टतः पूछा कि हमारे पूर्वजों ने जिसकी भली भाँति रक्षा की है, वह कोसल देश धन–धान्य से सम्पन्नतो है?

अदेवमातृकोरम्यः श्वापदैः परिवर्जितः।
विवर्जितोनरैः पापैर्मम पूर्वैः सुरक्षितः।
कच्चिज्जनपदः स्फीतःसुखं वसति राघव।।[14]

अनाज को रखने के लिए राजा की ओर से धान्य कोश (गोदाम) की व्यवस्था की जाती थी। श्रीराम के वनगमन के समय दशरथ ने आज्ञा दी थी कि मेरा खजाना और अन्न भण्डार ये दोनों वस्तुएँ राम के साथ जायें। इससे प्रतीत होता है कि श्रीराम के समय में प्रचुर मात्रा में अन्न का उत्पादन होता था। जिसको रखने के लिए गोदाम की व्यवस्था थी–

धान्यकोशश्च यः कश्चिद् धनकोशश्चममकः।
तौराममनुगच्छे तांवसन्तंनिर्जने वने।।[15]

वाल्मीकि रामायण में अनेक फलोद्यानों का उल्लेख प्राप्त होता है। जिसकी उत्पादन के क्षेत्र में महती भूमिका थी। वनगमन के समय कोसल देश से आगे बढ़ने पर श्रीराम ऐसे राज्यों से होकर निकले जो

रमणीय उद्यानों से व्याप्त था। इससे स्पष्ट होता है कि श्रीराम के समय में उद्यान भी अर्थोपार्जन का एक प्रमुख साधन था। इससे फलोद्योग की उन्नतावस्था सूचित होती है–

''रम्योद्यानसमाकुलम्''[16]

इस प्रकार यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि श्रीराम के काल में कृषि, खेती और किसानी आदि अत्यधिक समृद्ध थी। किसान खेती में खाद्यान्न से लेकर दलहन, तिलहन आदि सभी प्रमुखता से उगाते थे। श्रीराम के दौर में फसलों में रोग, बीमारियाँ और कीटों का प्रकोप नहीं होता था जिसके चलते किसानों को भरपूर उत्पादन मिलता था। जिससे चतुर्दिक खुशहाली और सम्पन्नता का सुखद वातावरण व्याप्त था।

पशुपालन

रामायण काल की आर्थिक व्यवस्थाओं में पशुपालन का प्रमुख स्थान था। कृषि कार्य हेतु पशु की आवश्यकता पड़ती थी। वस्तुतः ये दोनों एक दूसरे के पूरक थे। अयोध्या नगरी घोड़े, हाथी, गाय–बैल, ऊँट, गदहे, कम्बोज और बाह्लीक देश में उत्पन्न घोड़े, वनायुदेश के घोड़े, दरियाई घोड़े, गजराजों, अंजन और वामन दिग्गजों, भद्र–मद्र–मृग जाति के हाथी आदि से परिपूर्ण होकर अत्यन्त सुशोभित रहती थी। इससे स्पष्ट होता है कि श्रीराम के समय में पशुपालन आजीविका का प्रमुख साधन था–

वाजिवारणसम्पूर्णांगोभिरुष्ट्रैः खरैस्तथा।[17]
''कम्बोजविषयेजातैर्बाह्लीकैश्चहयोत्त्मैः।वनायुजैर्नदीजैश्चपूर्णाहरिहयोत्तमैः।।
विन्ध्यपर्वतजर्मत्तैः पूर्णाहैमवतैरपि।मदान्वितैरतिबलैर्मातङ्गैःपर्वतोपमैः।।
ऐरावतकुलीनैश्चमहापद्मकुलैस्तथा।अञ्जनादपिनिष्क्रान्तैर्वामनादपि च द्विपै।।
भद्रैमन्द्रैर्मृगैश्चैवभद्रमन्द्रमृगैस्तथा।भद्रमन्द्रैर्भद्रमृगैर्मृगमन्द्रैश्चसापुरी।।''[18]

रामायण में वर्णित विविध पशुओं में गाय पवित्र और मूल्यवान् रत्न थी और इस रत्न को लेने का अधिकारी राजा होता था–

रत्नंहिभगवन्नेतद् रत्नहारी च पार्थिवः।[19]

रामायण में ऐसे अनेक स्थल है जिनमें ब्राह्मण याचकों को असंख्य गौएँ दान में दी गयी हैं। इससे यह विदित होता है कि देश में गोधन का बाहुल्य था। राजा स्वयं गोपालन एवं गोसंवर्धन करता था। वन गमन के समय श्रीराम ने विभिन्न ब्राह्मणों में प्रत्येक को एक सहस्रगौ का दान किया–

तर्पयस्वमहाबाहोगोसहस्रेण राघव।[20]

भरत ने भी दशरथ के द्वादशह श्राद्ध में बहुत सी गायेंदान की थी–

गवां शतसहस्राणिदशतेभ्योददौ नृपः।।[21]

रामायण युगमें दूध को एक आदर्श भोजन माना गया है। गाय के दूध का उत्पादन प्रचुर मात्रा में होता था। रामायण में अनेक स्थलों पर गोरस, गोधन, गोकुल, गोपाल आदि सन्दर्भ मिलते हैं। हेमन्त ऋतु में दूध का उत्पादन अधिक मात्रा में होता था– '**सम्पन्नतरगोरसाः।**'[22] गौए पारिवारिक एवं धार्मिक क्रियाओं के लिए दूध–दही–घी तो सुलभ करती ही थी, साथ ही ढ़ोरो का गोबर ईधन के रूप में

जलाने के काम आता था। भरत ने चित्रकूट–स्थित राम की कुटिया में उपलों के ढेर लगे देखे, जो सर्दी से बचने के लिए जलाये जाते थे–

ददर्श च वनेतस्मिन् महतः संचयान् कृतान्।

मृगाणांमहिषाणां च करीषैः शीतकारणात्।।[23]

इस दुग्धोत्पादन हेतु गायों का संवर्धन करने के लिए गायों के समूह में हृष्ट–पुष्ट साँड़ रखे जाते थे–

शरद्गुणाप्यायितरूपशोभाःप्रहर्षिताः पांसुसमुत्थिताङ्गाः

मदोत्कटाः सम्प्रति युद्धलुब्धावृषागवां मध्यगता नन्दति।।[24]

इन गायों की देखभाल गोपालक करते थे। उपमान का आश्रय लेकर मार्कण्डेय आदि ऋषियों ने राजा के बिना राज्य की तुलनाग्वालों के बिना गायों से की है–

अगोपाला यथागावस्तथा राष्ट्रमराजकम्।[25]

रामायण कालीन आर्थिक व्यवस्था में अश्व का भी प्रमुख स्थान था। अति तीव्रगति से दौड़ना इन घोड़ों की प्रमुख विशेषता थी। अपनी शीघ्रगामी गति के कारण घोड़े लम्बे से लम्बे मार्ग को शीघ्र तय कर लेते थे। वशिष्ठ जी ने भरत को बुलाने के लिए दूतों को शीघ्रगामी घोड़ों पर सवार होकर जाने की आज्ञा दी–

पुरंराजगृहं शीघ्रं शीघ्रजवैर्हयैः।[26]

राष्ट्र के आर्थिक जीवन में अश्व की महती भूमिका थी। अश्वों की अच्छी नस्लें तैयार करने का विशेष ध्यान रखा जाता था। श्रीराम के घोड़े श्रेष्ठ नस्ल के शीघ्रगामी तुरग थे–

वहन्तोजवनारामंभोभोजात्यास्तुरंगमाः।[27]

श्रीराम की अर्थव्यवस्था में हाथी पालन का भी प्रमुख योगदान था। राजा दशरथ के शासन काल में ऐरावत, महापद्मत था दिग्गजों के वंशों में उत्पन्न मदमत्त गजराजों से अयोध्या परिपूर्ण रहती थी–

ऐरावत.....पुरी।।[28]

हाथी–दाँत का उद्योग भी अत्यधिक उन्नत था। इस काम में लगे कारीगर दतकार कहलाते थे। रथों, सिंहासनों, शयनासनों तथा राज महलों में हाथी–दाँत की पच्चीकारी की जाती थी। धनी वर्गों में इसकी बहुत माँग थी। कैकेयी का महल हाथी–दाँत की चौकियों तथा आसनों से सम्पन्न था–

दन्तराजतसौवर्णवेदिकाभिः समायुतम्।[29]

दन्तराजतसौवर्णैः संवृत्तं परमासनैः।।[30]

अतः कहा जा सकता है कि श्रीराम के काल में खेती और पशु पालन लोगों को जीने और जीवन–यापन का प्रमुख आ रही है। श्रीराम का राज्य धन–धान्य से परिपूर्ण रहा है। गोपाल न अपने चरम पर था। जिससे श्रीराम का आर्थिक जीवन अत्यधिक समृद्ध था।

वाणिज्य–व्यापार–किसी भी राष्ट्र की समृद्धि में वाणिज्य एवं व्यापार का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। रामायण काल में वाणिज्य–व्यापार वैश्यों के हाथ में था, जो वणिक कहलाते थे। राजकीय

कोश में वणिकों और व्यापारियों का मुख्य योगदान होता था। वणिक मुख्य कर दाता होने के कारण वे राजकीय संरक्षण के अधिकारी होते थे। रामायण कालीन अनेक नगर व्यापार के समृद्ध केन्द्र थे जहाँ देश–देशान्तर के व्यवसायी और शिल्पी वास करते थे। अयोध्या वाणिज्य–उद्योग की दृष्टि से सर्वाधिक प्रमुख नगरी थी। दशरथ ने यह प्रस्ताव किया था कि राम के साथ जाने वाली चतुरङ्गिणी सेना के साथ राजधानी के धनी–मानी व्यापारी भी जायँ–

.....वाणिजश्चमहाधनाः।

शोभयन्तुकुमारस्य वाहिनीः सुप्रसारिताः।।[31]

अयोध्या के राजमार्ग पर विभिन्न दुकानों में प्रचुर रत्नत था विक्रय के योग्य बहुत से द्रव्य संचित रहते थे–

प्रभूतरत्न बहुपण्यसंचयंद दर्शरामोविमलं महापथम्।।[32]

अयोध्या में सजे हुए बाजारों और दुकानों की शोभा दर्शनीय थी– **''समृद्धविपणापणाम्'।**[33] इसके राजमार्ग पर चन्दन, अगरु, उत्तम गन्ध द्रव्यों, क्षौम तथा कौशेय वस्त्रों, अनविंधे मोतियों और उत्तमोत्तम स्फटिक रत्नों से भरी–पूरी दुकाने सजी थी–

''चन्दनानां च मुख्यानामगुरूणां च संचयैः।।
उत्तमानां च गन्धानां क्षौमकौशाम्बरस्य च।
अविद्धाभिश्चमुक्ताभिरुत्तमैः स्फाटिकैरपि।।
शोभमानमसम्बाधं तंराजपथमुत्तमम्।।''[34]

इस प्रकार कहा जा सकता है कि रामायण काल की आर्थिक समृद्धि मेंअ न्य साधनों की भाँति वाणिज्य–व्यापार की महती भूमि का थी।

खनिज–पदार्थ

रामायण में अनेक खनिज पदार्थों का उल्लेख हुआ है। श्रीराम ने अयोध्या को विविध प्रकार की खानों से सुशोभित बताया है– **'खनिभिश्चोपशोभितः'**[35]**।** श्रीराम अचल राज चित्रकूट की शोभा को दिखाते हुए सीता से कहते हैं–यह पर्वत विभिन्न प्रकार की धातुओं में कोई चाँदी के तुल्य, कोई लाल, कोई पीला, कोई काला, कोई नीला और कोई मंजिष्ठ के रंग का दीख पड़ता है–

''शिखरैः खमिवोद्विद्धैर्धातुमद्भिर्विभूषितम्।।
केचिद् रजतसंकाशाकेचिद् क्षतजसंनिभाः।
पीतमांजिष्ठवर्णाश्चकेचिन्मणिवरप्रभाः।।
पुष्पार्ककेतकाभाश्चकेचिज्ज्योतीरसप्रभा।
विराजन्तेऽचलेन्द्रस्य देशा धातुविभूषिताः।।''[36]

इसी प्रकार रामायण में अनेक स्थलों पर विविध प्रकार के धातुओं का उल्लेख प्राप्त होता है। सोने–चाँदी का नाना प्रकार के पात्र और आभूषण बनाने में उपयोग किया जाता था। इस्पात का उपयोग अर्गल, बाण की नोक, तलवार और पट्टि शबनाने में होता था। कवच, गदा तथा अन्य शस्त्रों के निर्माण में काष्णायस प्रयोग में लाया जाता था। धनुष–बाण और तलवार को सोने से विभूषित किया जाता था। घोड़े और हाथियों को भी उपर्युक्त कवचादि पहनाये जाते थे। स्त्री और पुरुष भी आभूषणों

के प्रेमी थे। इस प्रकार कहा जा सकता है कि उपर्युक्त धातुओं के व्यापक प्रयोग से खनिज–उद्योगों का अस्तित्व सूचित होता है।

आजीविका के उपर्युक्त साधनों के अतिरिक्त और भी अनेक उद्योग–धन्धे रामायण काल में प्रचलित थे। श्रीराम से मिलने के लिए जाते समय भरत के साथ अयोध्या के लगभग सभी नागरिक भी गये थे। उस वर्णन में तत्कालीन विविध उद्योगों एवं शिल्पों की विस्तृत सूची प्राप्त होती है। तदनुसार मणिकार, कुम्भकार, सूत्रकर्म विशेषज्ञ, शस्त्र बनाने वाले, मायूरक, लकड़ी–चीरने वाले, मणि–मोती में छेद करने वाले, रोचक, दन्तकार, सुधाकार, गन्धी, सोनार, कम्बल कारक, गरम जल से नहलाने का काम करने वाले, वैद्य, धूपक, शौण्डिक, धोबी, दर्जी, महतो, नट, केवट, ब्राह्मण आदि वाणिज्य उद्योगों के प्रतिनिधि चित्रकूट गये थे–

''मणिकाराश्च ये केचित् कुम्भकाराश्च शोभनाः।
सूत्रकर्मविशेषज्ञाः ये च शास्त्रोपजीविनः।।
मायूरकाः क्राकचिकावेधकारोकास्तथा।
दन्तकाराः सुधाकारा ये च गन्धोपजीविनः।।
सुवर्णकाराः प्रख्यातास्तथाकम्बलकारकाः।
स्नापकोष्णोदकावैद्या धूपकाः शौण्डिकास्तथा।।
रजकास्तुन्नवायाश्चग्रामघोषमहत्तराः।
शैलूषाश्च सह स्त्रीभिर्यान्तिकैवर्तकास्तथा।
समाहितावेदविदोब्राह्मणावृत्तसम्मताः।
गोरथैर्भरतं यान्तमनुजग्मुः सहस्रशः।।''[37]

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि रामायण युग में अयोध्या समृद्ध एवं वैभव सम्पन्न थी। उस समय की आर्थिक स्थिति पर्याप्त उच्च थी। अतः मनुष्य का सामान्य जीवन स्तर भी उच्च था। आहार, वस्त्र, आभूषण, भवन, उद्यान, आपण, पशु आदि से तत्कालीन अर्थ सम्पन्नता दृष्टि गोचर होती है। आचार्य बलदेव उपाध्याय का भी यही मानना है कि ''**कृषि, पशुपालन, व्यापार–वाणिज्य–ये तीन किसी भी राष्ट्र की अर्थव्यवस्था के प्रमुख साधन हैं। साथ ही वनों से प्राप्त होने वाली वनज सम्पत्ति तथा खानों से प्राप्त खनिज भी अर्थ व्यवस्था को सुदृढ़ बनाते हैं तथा व्यापार को विविधात्मक एवं उन्नत करते हैं।**''[38]

सन्दर्भ–सूची

1. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण 6/83/21–39
2. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण 2/100/68
3. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण 2/100/47
4. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण 1/32/10
5. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण 2/50/8–9
6. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण 2/52/101
7. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण 7/70/10
8. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण 3/16/16–17
9. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण 2/33/17

10. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण 2/112/12
11. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण 5/40/2
12. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण 4/7/20
13. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण 7/41/20
14. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण 2/100/45–46
15. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण 2/36/7
16. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण 2/50/11
17. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण 1/5/13
18. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण 1/6/22–25
19. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण 1/53/9
20. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण 2/32/14
21. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण 1/14/50
22. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण 3/16/7
23. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण 2/99/7
24. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण 4/30/38
25. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण 2/67/29
26. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण 2/68/6
27. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण 2/45/14
28. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण1/6/24–25
29. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण 2/10/14
30. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण 2/10/15
31. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण 2/36/3
32. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण 2/17/47
33. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण 2/14/27
34. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण 2/17/3–5
35. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण 2/100/45
36. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण 2/94/4–6
37. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण 2/83/12–16
38. आचार्य बलदेव उपाध्याय : संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (तृतीय–खण्ड), पृ0 141

सन्दर्भ–ग्रन्थ–सूची

1. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण (प्रथम खण्ड), प्रकाशक–गीता प्रेस हगब गोरखपुर, सं0 2078, उनसठवाँ पुनर्मुद्रण।
2. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण (द्वितीय खण्ड), प्रकाशक–गीता प्रेस गोरखपुर, सं0 2080, चौसठवाँ पुनर्मुद्रण।
3. आचार्य बलदेव उपाध्याय : संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (तृतीय खण्ड), आर्षकाव्य, सं0 भोला शंकर व्यास, प्रकाशक–हरिबख्श सिंह, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ, वि0सं0 2075 (2018ई0)